DR. JINENDRA KUMAR JAIN: I am on a point of order. The hon. Member has said about Adivasis. Secondly, he has used the words, 'conversion from Christianity to Hindus'. It is a matter of fact that Christianity is only 2000 year old. If the people....*(Interruptions)*

डा० रत्नाकर पाण्डेय: बी०जे०पी० वाले वहां सत्ता का दुरुपयोग कर रहे हैं...

THE DEPUTY CHAIRMAN: There is no point of order. This is no point of order. It is a point of explanation. You can ask for a special mention and explanation tomorrow, not today. *(Interruptions)*. No, there is no point of order. Yes, Shrimati Sarala Maheshwari.

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार): जैन साहब को मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि काशी के इतने बड़े पंडित पं० रत्नाकर पाण्डेय को हिन्दू धर्म की व्याख्या न समझाएं, वह अच्छी तरह जानते होंगे...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am not permitting. Shrimati Sarala Maheshwari. *(Interruptions)*.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Nothing from now is going on record. I am not allowing.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN:*

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will not allow you like this. If you feel that you have to make an explanation, ask for an explanation and go ahead, not today. *(Interruptions)*. I am not allowing any *spashtikaran*. *(Interruptions)*. अगर आपको लगता है कि मैंबर साहब कुछ गलत कह गए तो कल आप स्पेशल मैंशन मांग लीजिए और उस पर बोल दीजिए। इस तरह से टोका-टाकी करेंगे तो there will be no end to the discussion because definitely you are not going to like what he said and he is going to like what you say. *(Interruptions)*. After my ruling nothing is going on record.

Shrimati Sarala Maheshwari.

SHRI JINENDRA KUMAR JAIN:*

Need to Celebrate Birth Centenary of Pandit Rahul Sankrityayan

श्रीमती सरला माहेश्वरी (पश्चिमी बंगाल): माननीय उपसभापति जी, मैं अपने विशेष उल्लेख के जरिए महापंडित राहुल सांकृत्यायन की जन्म शताब्दी की ओर आपका और इस सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं।

महोदया, लगभग 150 मूल्यवान कृतियों के रचयिता, 36 भाषाओं के ज्ञाता, प्रकाण्ड पंडित और हिन्दी के अमर साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन भारतवासियों के लिए एक अत्यंत प्रिय और परिचित नाम है। राहुल सिर्फ एक लेखक ही नहीं थे, वे महायात्री थे। दुर्गम गिरी, कान्तर पथ को पार कर दूरदराज़ के क्षेत्रों के साथ सांस्कृतिक एकता के सूत्रों को खोजने वाले आधुनिक काल के वे एक महान् सांस्कृतिक दूत थे तिब्बत के दुर्गम क्षेत्रों, श्रीलंका, जापान, कोरिया, मंचूरिया, ईरान और सोवियत संघ तथा यूरोप के अनेक देशों तक उनका कार्य क्षेत्र फैला हुआ था।

इसके साथ ही राहुल के व्यक्तित्व को जो एक और सबसे उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण पक्ष था वह था मेहनतकश जनता के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता और जुल्म तथा अन्याय के विरुद्ध अदम्य संघर्षशीलता। महापंडित का संपूर्ण व्यक्तित्व उनके कृतित्व की तरह ही हर न्यायप्रिय संस्कृतिवान व्यक्ति के लिए प्रेरणा का दीप स्तम्भ रहेगा।

राहुल जी का जन्म 9 अप्रेल, 1893 के दिन उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के छोटे से गांव पंछहा के एक गरीब परिवार में हुआ था। पिता का नाम था गोवर्धन पांडे और मां का नाम कुलवन्ती देवी। परिवार की गरीबी और गांव की सीमाओं से सिकुड़कर रह जाने के लिए अभिशप्त इस जीवन ने अपने शैशव से ही उन सारी सीमाओं को तोड़कर दूर-दराज तक फैले विश्व के आयतन से अपने व्यक्तित्व को एकाकार कर देने का प्रण ले लिया था और 13 वर्ष की आयु में ही आजमगढ़ जिले की सीमा के पार जो कदम रखा तो फिर ज्ञान-विज्ञान की राह की असंख्य मंजिलें अनायास उन बढ़ते हुए कदमों के तले आती चली गई। लगातार लेखन, गहन शोध तथा सामाजिक क्रियाशीलता से तिल तिल कर बने उस व्यक्तित्व ने अपने साथ ही हमारे समाज को भी साधा और आज ऐसी पीढ़ियां मौजूद है जिन्होंने राहुल के साहित्य से प्रेरणा लेकर अन्याय और जुल्म के विरुद्ध आवाज़ उठाने तथा चिन्तन को वैज्ञानिक आधार देने के प्रति सदैव निष्ठावान रहने के आदर्श को प्राप्त किया है। राहुल हमारे देश की आजादी के लिए तथा जात-पात और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध समझौताहीन संघर्ष करने वाले एक अमर सेनानी थे। काशी की पंडित सभा ने उन्हे महापंडित की उपाधि दी। श्री लंका विद्यालंकार परिवेण में त्रिपिटकाचार्य की, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद ने साहित्य वाचस्पति की तथा भारत सरकार ने पद्मविभूषण की उपाधि से विभूषित किया था।

अप्रैल 1992 से मार्च 1993 तक का वर्ष इस महापंडित का जन्म शताब्दी वर्ष है। अपने इस विशेष

*Not recorded.

उल्लेख प्रस्ताव के जरिये सरकार से मैं यह निवेदन करना चाहूंगी कि इस महापंडित और मेहनतकशों के हमदर्द साहित्यकार की जन्म शताब्दी वर्ष को देशव्यापी पैमाने पर उचित सम्मान के साथ मनाया जाये। इसके लिए उसे हर सम्भव कोशिश करनी चाहिए। मेरा अनुरोध है कि इस उद्देश्य के लिए तत्काल एक शताब्दी समारोह समिति का गठन किया जाये जिसमें देश के अनेक जाने-माने साहित्यकारों, भाषा-शास्त्रियों और गवेषकों को शामिल किया जाये। दूरदर्शन पर इस अवसर पर महापंडित के प्रेरणादायी जीवन पर एक धारावाहिक का प्रसारण किया जाये।

उनका साहित्य सस्ती दरों पर सुलभ हो सके इसकी व्यवस्था की जाये। राहुल सांस्कृत्यायन के नाम पर एक भारतीय विश्वकोष संस्था का निर्माण किया जाये जो भारत की सभी भाषाओं में एक विश्वकोष के प्रकाशन का विशाल प्रकल्प अपनाये। इसके अलावा विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य के अनुवाद के लिए देश के प्रमुख शहरों में राहुल केन्द्र की स्थापना की जाये। मैं चाहूंगी कि सारा सदन इस का समर्थन करे।

श्रीमती कमला सिन्हा: मैं इसका समर्थन करती हूं।

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश): मैं इसका समर्थन करता हूं।

डा॰ जिनेन्द्र कुमार जैन (मध्य प्रदेश): मैं भी समर्थन करता हूं।

श्री रामदास अग्रवाल (राजस्थान): मैं इसका समर्थन करता हूं।

श्री लक्खीराम अग्रवाल (मध्य प्रदेश): मैं भी समर्थन करता हूं।

श्री कैलाश नारायण सारंग (मध्य प्रदेश): मैं भी समर्थन करता हूं।

डा॰ रत्नाकर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभापति जी, इतने बड़े विद्वान का शताब्दी वर्ष बहुत बड़े स्तर पर मनाया जाए। राहुल सांस्कृत्यायन जैसे विद्वान इस शताब्दी में बहुत कम हुए हैं। उनकी एक राष्ट्रीय समिति बनाकर....(**व्यवधान**)

उपसभापति: आज आप कुछ ज्यादा बोल लिये दूसरों को भी बोलने दीजिए। हर चीज में आपकी आवाज़ ऊंची उठे तो इसका मतलब यह नहीं है कि जिन्होंने मांगा है उन्हें एलाऊ न करूं। (**व्यवधान**)

डा॰ रत्नाकर पाण्डेय: आपकी कृपा है। (**व्यवधान**)

उपसभापति: कृपा की भी एक सीमा होती है। (**व्यवधान**)

श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश): उपसभापति महोदया, इस सदन की सम्मानीय सदस्या श्रीमती सरला माहेश्वरी जी ने जिस प्रकार से महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी के संबंध में विशेष उल्लेख के माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित किया है मैं भी अपने को उससे सम्बद्ध करता हूं।

महोदया, हमारे जनपद आजमगढ़ जिले के छोटे से गांव में जो कि आजमगढ़ से करीब 10 किलोमीटर दूरी पर है, वहीं पर उनका जन्म हुआ। गरीब परिवार में जन्म लेकर अपने अध्यवसाय अपने परिश्रम लगन और अपनी बुद्धिमता के बल पर जिस तरह से देश में अपना नाम किया है वह बहुत ही स्मरणीय बात है। उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर हमें भी गर्व है और देश को भी गर्व है। जिस प्रकार से हिन्दी साहित्य के भंडार को भरने का काम अपनी लेखनी के माध्यम से किया है वह बहुत ही सराहनीय है। साथ ही साथ वह जहां पर गंभीर विचारों के धनी, प्रगतिशील विचारों के धनी थे वहीं पर उन्होंने 36 भाषाओं में अपना स्थान बना लिया था, विशेष जानकारी रखते थे। उसके आधार पर जो उन्होंने विचार दिये हैं वह विचार हमेशा हमेशा के लिए आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा श्रोत के रूप में काम करेंगे। मुझे विश्वास है जिस प्रकार से उनकी शताब्दी मनाई जा रही है इस बात को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय सरकार को सचमुच में चाहिए कि एक समिति बनाकर उनके सारे कृतित्व और व्यक्तित्व को ध्यान में रखते हुए उन्हें गौरव प्रदान करें। इससे उनका गौरव बढ़ सकेगा और देश का भी मान बढ़ सकेगा। विशेष रूप से हिन्दी साहित्य का जो भंडार भरा है उसके आधार पर उन्हें और भी सम्मान मिल सके इसलिए मेरा सरकार से आग्रह है कि एक कमेटी बनाई जाए ताकि उसके तत्वावधान में शताब्दी समारोह को सफलतापूर्वक मनाया जा सके एवं शताब्दी वर्ष का मनाया जाना सार्थक हो सके। इन शब्दों के साथ मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

1.00 P.M.

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार): महोदया, मैं सिर्फ दो मिनट का समय लूंगा।

उपसभापति: इस विषय पर काफी बोल दिया गया है। आपने अपने आप को एसोसिएट भी कर दिया है। आज बहुत समय नष्ट हो रहा है।

श्री शंकर दयाल सिंह: मैंने लिखकर परममिशन मांगी है।

महोदया, अभी सरला माहेश्वरी जी ने और राम नरेश यादव जी ने स्पेशल मेंशन के द्वारा जो प्रस्ताव रखा है उसमें मैं भी एक बात जोड़ना चाहता हूं और वह बात यह है कि महापंडित राहुल सांस्कृतायन जी का जन्म यद्यपि उत्तर प्रदेश में हुआ था, लेकिन सभी जानते हैं कि उनका कार्य क्षेत्र बिहार रहा और स्वतंत्रता आन्दोलन से भी वे जुड़े रहे थे। छपरा जिला जहां राजेन्द्र बाबू पैदा हुए, मौलाना मजरुल हक पैदा हुए, उस जिले की कांग्रेस

[श्री शंकर दयाल सिंह]

कमेटी के वे अध्यक्ष भी रहे थे। हिन्दी के इतने बड़े पंडित होते हुए भी वे इसके अध्यक्ष रहे।

उपसभापति: हिन्दी के बड़े पंडित क्या अध्यक्ष नहीं हो सकते?

श्री शंकर दयाल सिंह: लेखन के अतिरिक्त मैं कह रहा हूं। मेरा आपसे अनुरोध है कि वे जब तिब्बत गये थे और सारे क्षेत्रों में गये तो हिमालय के तराई क्षेत्र का उन्होंने पैदल दौरा किया और 11 खच्चरों पर पाण्डुलिपियां लाद कर हिन्दुस्तान लाये। अभी भी उनकी साढ़े सात सौ के लगभग लाइफ पाण्डुलिपियां पटना के म्यूजियम में पड़ी हुई है। उनकी देखभाल ठीक से नहीं हो पा रही है। उनकी पत्नी श्रीमती कमला सांस्कृतायन किसी न किसी तरह से उनकी अप्रकाशित चीजों को प्रकाशित कर रही है। अभी अभी मुझे सूचना मिली है कि देहरादून में एक ट्रस्ट भी कायम हुआ है और दार्जिलिंग में उनके नाम पर कुछ चीजें प्रकाशित हुई हैं। वे चीन गये, रूस गये, तिब्बत गये और अन्य सारे क्षेत्रों में गये। शायद ही किसी एक व्यक्ति ने इतना किया हो। ऐसी स्थिति में मेरी आपसे गुजारिश है, अपील है कि सरकार को उनका जन्म शताब्दी समारोह उसी ऊंचाई से मनाना चाहिए। राहुल सांस्कृतायन जी का जितना कृतित्व है, जितनी उनकी लाइफ पाण्डुलिपियां है, सभी का प्रकाशन हो और लोगों को इस बात की जानकारी मिले कि अनुपलब्ध साहित्य अगर कोई व्यक्ति लाता है तो यह देश उसकी बहुत कद्र करता है। साथ ही मैं यह भी कहना चाहता हूं कि तीन लोगों की जन्म शताब्दियां हुई है, महापंडित राहुल सांस्कृतायन, वृंदावनलाल वर्मा और राधिका रमण प्रताप सिंह, इनके तीन डाक टिकिट भी निकाले जायें।

Agitation by Workers of Auto-Tractors Ltd., Pratapgarh, UP

श्री शिव प्रताप मिश्र (उत्तर प्रदेश): महामहिता, आपने मुझे इस महा सदन में विशेष उल्लेख करने का अवसर दिया, उसके लिए मैं हृदय से आपका आभार व्यक्त करता हूं।

मैं उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जनपद के विषय में, जो कि आर्थिक रूप से बहुत ही पिछड़ा हुआ जिला है, वहां पर केन्द्रीय सरकार की पहल पर 1978 में एक ट्रेक्टर फैक्ट्री लगाई गई थी, उसके संबंध में ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। वहां पर स्थानीय निवासियों को रोजगार मिलता था जिससे हजारों की संख्या में लोगों की रोजी-रोटी चल रही थी। लेकिन इसके पहले की सरकार ने उसको सिपानी परिवार को बेच दिया और उसमें बहुत ही बड़ा भ्रष्टाचार फैलने का आरोप बहुत से लोगों ने लगाया है। इस संबंध में हमारे साथी डा० रत्नाकर पाण्डेय जी ने विशेष उल्लेख भी किया था जिससे डाला सीमेंट फैक्ट्री का राष्ट्रीयकरण हुआ। लेकिन इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। उसके विषय में वहां के हजारों कर्मचारी आज भी आन्दोलन रत हैं। वहां के पुलिस अधिकारी अपने बर्बरतापूर्ण दमनात्मक कार्यवाही से कर्मचारियों को पीड़ित कर रहे हैं। उसकी ओर विशेष उल्लेख द्वारा हम सम्मानित सदन का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं। वर्तमान सरकार की शह पर पुलिस के डंडे का सहारा लेकर कई सौ कर्मचारियों को अन्यायपूर्वक नौकरी से अकारण बाहर कर दिया गया है। उनके परिवार और छोटे छोटे बच्चे आज भूखमरी से मर रहे हैं। प्रजातांत्रिक ढंग से इस अन्याय का विरोध करने पर पुलिस ने निरपराध कर्मचारियों को जेल में ठूंस दिया है। उन पर डंडे बरसाये जा रहे हैं और कई कर्मचारियों को चोटें आई है। पुलिस ने उन कर्मचारियों के साथ अमानवीय व्यवहार किया। जेल के अन्दर किसी को मिलने की भी इजाजत नहीं है। घायल कर्मचारियों के लिए कोई उपचार की व्यवस्था नहीं है। जेल के अन्दर भी उनके साथ दुर्व्यवहार हो रहा है।

इन दमनात्मक कार्यवाहियों के विरोध में प्रतापगढ़ और आसपास जनपद के अनेक प्रमुख सामाजिक तथा राजनैतिक नेता जिनमें सर्वश्री आनन्द प्रताप सिंह, हाजी रमजान अली, जिला कांग्रेस अध्यक्ष, प्रतापगढ़, राजेन्द्र प्रताप सिंह, एम० एल० सी० और शक्तेन्द्र द्विवेदी प्रमुख हैं, शांतिपूर्वक आन्दोलन चला रहे हैं। आस पास जनपदों की क्षेत्रीय जनता जिनका नेतृत्व भूतपूर्व मंत्री श्री दिनेश सिंह कर रहे हैं और जिसमें हमारे उत्तर प्रदेश में विरोधी दल के नेता श्री प्रमोद तिवारी की भी इसमें पूरी सहानुभूति है। इसी मसले को लेकर 28 फरवरी 1992 से स्थानीय नेता श्री चन्द्र नाथ सिंह के नेतृत्व में अनिश्चितकालीन सामूहिक अनशन भी चल रहा है।

इनमें से बहुतों का स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया है। इसलिये मेरा अनुरोध है कि केन्द्रीय सरकार इस अत्यन्त महत्वपूर्ण मामले में तत्काल हस्तक्षेप करे और राज्य सरकार को निर्देश दे कि निरपराध कर्मचारियों को तत्काल जेल से मुक्त किया जाय, घायलों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाय और जो निकाले गये कर्मचारी हैं उनको तुरन्त बहाल किया जाय। साथ ही जो आमरण अनशन पर बैठे हुए नेता है उन समस्त नेताओं का अनशन समाप्त किया जाय। महामहिमा, मैं आपके द्वारा सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहता हूं कि यद्यपि प्रतापगढ़ आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा है लेकिन वहां स्वतंत्रता आंदोलन में, किसान आंदोलन का सबसे पहला चरण पट्टी तहसील प्रतापगढ़ से ही पंडित जवाहर लाल नेहरु जी ने प्रारंभ किया था। वहां पर भारत मुक्ति आंदोलन में कमला नेहरू जी कहला में घायल हुई थी और वहां के राजा रामपाल सिंह जी ने 1885 में ह्यूम